

॥ अर्गलास्तोत्रम् ॥

॥ श्री ॥

श्रीचण्डिकाध्यानम्

ॐ बन्धूककुसुमाभासां पञ्चमुण्डाधिवासिनीम् ।
स्फुरच्चन्द्रकलारत्नमुकुटां मुण्डमालिनीम् ॥
त्रिनेत्रां रक्तवसनां पीनोन्नतघटस्तनीम् ।
पुस्तकं चाक्षमालां च वरं चाभयकं क्रमात् ॥
दधतीं संस्मरेन्नित्यमुत्तराम्नायमानिताम् ।

अथवा

या चण्डी मधुकैटभादिदैत्यदलनी या माहिषोन्मूलिनी
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथनी या रक्तबीजाशनी ।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धिदात्री परा
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु विश्वेश्वरी ॥

अथ अर्गलास्तोत्रम्

ॐ नमश्चण्डिकायै

मार्कण्डेय उवाच ।

ॐ जय त्वं देवि चामुण्डे जय भूतापहारिणि ।
जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥
जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी ।
दुर्गा शिवा क्षमा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥
मधुकैटभविध्वंसि विधातृवरदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ३ ॥
महिषासुरनिर्नाशि भक्तानां सुखदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ४ ॥
धूम्रनेत्रवधे देवि धर्मकामार्थदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥
रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्डविनाशिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ६ ॥
निशुम्भशुम्भनिर्नाशि त्रिलोक्यशुभदे नमः ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ७ ॥
वन्दिताङ्घ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्यदायिनि ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ८ ॥
अचिन्त्यरूपचरिते सर्वशत्रुविनाशिनि ।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ९ ॥
 नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चापर्णे दुरितापहे ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १० ॥
 स्तुवद्भयो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ११ ॥
 चण्डिके सततं युद्धे जयन्ति पापनाशिनि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १२ ॥
 देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि देवि परं सुखम् ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥
 विधेहि देवि कल्याणं विधेहि विपुलां श्रियम् ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १४ ॥
 विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १५ ॥
 सुरासुरशिरोरत्ननिघृष्टचरणेऽम्बिके ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १६ ॥
 विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तञ्च मां कुरु ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १७ ॥
 देवि प्रचण्डदोर्दण्डदैत्यदर्पनिषूदिनि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १८ ॥
 प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १९ ॥
 चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रसंसुते परमेश्वरि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २० ॥
 कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २१ ॥
 हिमाचलसुतानाथसंस्तुते परमेश्वरि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २२ ॥
 इन्द्राणीपतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २३ ॥
 देवि भक्तजनोद्दामदत्तानन्दोदयेऽम्बिके ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २४ ॥
 भार्या मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम् ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २५ ॥
 तारिणि दुर्गसंसारसागरस्याचलोद्भवे ।
 रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ २६ ॥
 इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः ।

सप्तशतीं समाराध्य वरमाप्नोति दुर्लभम् ॥ २७ ॥
॥ इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे अर्गलास्तोत्रं समाप्तम् ॥

Encoded by K. Shankaran (achintya@ican.net)
Proofread by Sunder Hattangadi sunderh@hotmail.com

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated November 22, 2001